

अभिप्रेरणा (MOTIVATION)

BAPSY-101

Presented by
Dr. Seeta
Assistant Professor
Department of Psychology
Uttarakhand Open University

प्रेरणा (MOTIVATION)



Presented by
Dr. Seeta
Assistant Professor
Department of Psychology
Uttarakhand Open University

प्रेरणा(Motivation)

प्रेरणा लैटिन के 'मोटिव,शब्द से बना है जिसका अर्थ "गतिशील होना" होता है। इस अर्थ में प्रेरणा व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। प्रेरणा के इस शाब्दिक अर्थ से व्यक्ति की उस आंतरिक शक्ति या अग्रसारित करने वाली ऊर्जा का बोध होता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति किसी उत्तेजना के प्रति खास तरह की प्रतिक्रिया करने हेतु कार्यशील होता है।

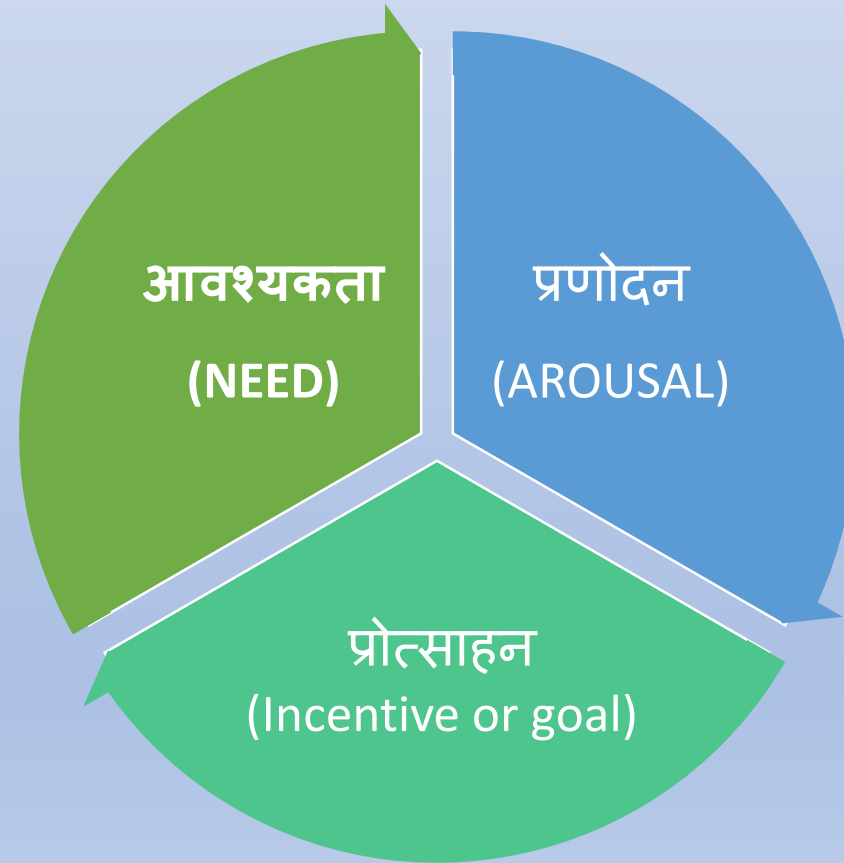
प्रेरणा की परिभाषाएँ

- गिलफोर्ड के अनुसार “प्रेरणा किसी खास आंतरिक कारक या अवस्था को कहते हैं जो किसी क्रिया को प्रारम्भ करती है तथा उसे जारी रखती है”।
- न्यूकॉम्ब की परिभाषा-“प्रेरणा प्राणी की वह अवस्था है जिसमें उसकी शारीरिक शक्ति वातावरण में उपस्थित विभिन्न चीजों में से किसी विशेष चीज को प्राप्त करने की ओर चयनात्मक ढंग से अग्रसारित होती है”।
- मार्गन एवं किंग के अनुसार, “प्रेरणा एक सामान्य शब्द है। यह प्राणी की भीतरी अवस्था, व्यवहार एवं उस लक्ष्य की ओर इंगित करता है, जिस ओर उसका व्यवहार निर्देशित होता है।

प्रेरणा की विशेषताएँ

- प्रेरणा व्यक्ति की एक खास अवस्था होती है।
- व्यक्ति की यह खास अवस्था आंतरिक होती है, जो किसी आवश्यकता, कमी या इच्छा से उत्पन्न होती है।
- इस अवस्था के उत्पन्न होने पर व्यक्ति बेचैनी का अनुभव करता है और इस बेचैनी को दूर करने के लिए व्यक्ति क्रिया करने की ओर अग्रसरित होता है।
- प्रेरणात्मक व्यवहार चयनात्मक स्वरूप का होता है तथा उसका व्यवहार किसी निर्धारित उद्देश्य या लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर निर्देशित होता है।
- व्यक्ति में उत्पन्न प्रेरणात्मक व्यवहार उद्देश्य प्राप्ति तक जारी रहता है।
- व्यक्ति अपने उद्देश्य को प्राप्त करने की ओर ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता है, उसकी कार्यशीलता की तीव्रता और बेचैनी की अवस्था में कमी आती रहती है और उद्देश्य प्राप्त हो जाने पर कार्यशीलता तथा बेचैनी पूर्णतः समाप्त हो जाती है। इसे व्यवहार की पूर्णता की संज्ञा दी जा सकती है।

Basic Motivational Concepts



आवश्यकता

- भोजन या पानी की आवश्यकता
- काम, निद्रा, किसी संकट से बचना, ज्ञानोपार्जन आदि की आवश्यकताएँ

प्रणोदन

- प्रणोदन व्यक्ति में उत्पन्न होने वाली एक अवस्था है, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति क्रियाशील होता है।
- मनुष्य के प्रत्येक व्यवहार के लिए इस अवस्था की उत्पत्ति अनिवार्य है।
- यह अवस्था व्यक्ति में बल प्रदान करती है, जिसके फलस्वरूप वह कोई व्यवहार करने हेतु क्रियाशील होता है।

प्रोत्साहन

- प्रोत्साहन का तात्पर्य प्राणी की क्रिया को आकर्षित करने वाली या उसे किसी कार्य का प्रलोभन देने वाली वस्तु से लगाया जा सकता है।
- उदाहरण के लिए, भूखे व्यक्ति के लिए भोजन, प्यासे के लिए पानी, विद्यार्थी के लिए परीक्षा में ऊँचा स्थान पाना, बेरोजगारों के लिए नौकरी प्राप्त करना आदि

प्रेरकों के प्रकार (Types of motivation)

जन्मजात प्रेरक

शारीरिक प्रेरक

- भूख,
- प्यास,
- काम,
- मातृत्व भाव मलोत्सर्जन

अन्य शारीरिक प्रेरक

- हवा
- पीड़ा
- ताप, निद्रा

अर्जित प्रेरक

सार्वजनिक अर्जित प्रेरक

- सामुदायिकता
- जिज्ञासा या उत्सुकता
- आत्मस्थापन
- कलह

वैयक्तिक प्रेरक

- उपलब्धि की प्रेरणा
- आकांक्षा-स्तर
- आदत की विवशता
- अभिरूचियाँ
- मनोवृत्तियाँ
- अचेतन प्रेरक

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त-

- मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त- फ्रायडवादियों ने 'सेक्स' को व्यवहार की प्रारंभिक अभिप्रेरक शक्ति माना और इसे 'लिबिडो' कहा। वे अहं तथा व्यक्ति की आत्म घटना पर बल देते हैं। अहं इड् की उत्तेजनाओं अर्थात् अचेतन के आरम्भिक भाग का नियम करता है- इस भाग में अनियंत्रित सुख-भोग की आकांक्षी प्रवृत्तियाँ विद्यमान रहती हैं। अतः सेक्स -शक्ति की सन्तुष्टि और उसके समायोजन के प्रयासों से उत्पन्न चिन्ता विभिन्न प्रकार की क्रियाओं की और अग्रसर करती है।

ज्ञानवादी सिद्धान्त-

- अभिप्रेरणा के ज्ञानवादी सिद्धान्त को मानने वाले लेविन, वर्दीहमर, हाइडर, फैस्टिंजर, न्यूकाम्ब और हैलसन थे। अभिप्रेरणा के ज्ञानवादी सिद्धान्त घटनाओं के ज्ञान तथा पूर्णज्ञान पर केन्द्रित है। इसके अनुसार हम समझ, विचार तथा निर्णय द्वारा उन सापेक्षित-मूल्यों को चुन लेते हैं जो हमारे व्यवहार को अनुशासित करते हैं। हम उन विश्वासों, विचारों तथा आशाओं का निर्माण करते हैं जो हमारे लक्ष्य-अनुगामी व्यवहार का नियम करते हैं,। ज्ञानवादी आदर्श इस कल्पना पर निर्मित किये गये हैं कि किसी वस्तु के सम्बन्ध में लोगों की अपनी-अपनी पसन्द होती है। किसी भी व्यक्ति द्वारा प्राप्त परिणाम उसके चुनावों तथा उन घटनाओं पर आधारित होता है जो उसके नियन्त्रण से परे होती है। अतः जब कोई व्यक्ति उन विकल्पों में से चुनता है जिनके परिणाम अनिश्चित हों, तो इसमें कुछ खतरा भी रहता है और यह अपने आप में अभिप्रेरक है। ज्ञानवादी सिद्धान्त व्यक्ति द्वारा विकल्पों में किये गये चुनाव को उसमें काम कर रही कार्य-शक्ति पर आधारित मानते हैं।

व्यवहारवादी सिद्धान्त-

- थार्नडाइक, हल, मिलर एवं डोलर्ड, मौरेर, स्पैन्स, स्किनर, और पीटी0 यंग व्यवहारवादी सिद्धान्तों के मुख्य समर्थक हैं। अभिप्रेरणा की धारणाएँ मुख्य रूप से नव-दृढ़ता के सिद्धान्त पर आधारित है। व्यवहार को लक्ष्य अभिमुख माना जाता है और अभिप्रेरणा को शक्ति प्रदान करने वाले तत्वों तथा उसे निर्देशित करने वाले तत्वों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न सैद्धान्ति धारणाओं का प्रयोग किया जाता है। व्यवहारवाद के प्राचीन रूपों 'अनुप्रेरकों की कमी' की धारणा का प्रयोग किया गया है जो शरीर में बुनियादी शक्ति-स्रोत को अभिन्न अनुप्रेरक मानती है। इन अनुप्रेरणाओ को लक्ष्य अभिमुख क्रियाओं की ओर अग्रसर करने के लिए ही व्यवहार की दिशा निर्देशित होती है। अधिकांश प्राचीन व्यवहारवादी सिद्धान्त इस बात को मानते हैं कि अभिप्रेरणा शरीर के भीतर उत्पन्न होने वाली आवश्यकताओं से पैदा होती है। नवीतनम सिद्धान्त उदाहरणस्वरूप, 1953 में प्रतिपादित स्किनर का सिद्धान्त-अभिप्रेरणा की विशुद्ध व्यावहारिक धारणा को ही मान्यता देते हैं। वे इस बात पर बल देते हैं कि क्रियात्मक उद्देश्य अथवा लक्ष्य अभिमुख व्यवहार की स्वीकृति से परे किसी भी कल्पना को आन्तरिक शक्ति स्रोतों पर आधारित नहीं माना जा सकता। व्यवहार कई परिणामात्मक स्थितियों की ओर उन्मुख होता है और यदि इन स्थितियों का शारीरिक व्यवहार में लगातार पालन होता रहे तो उन्हें क्रियात्मक रूप से पुरस्कारात्मक स्थितियाँ कहा जा सकता है।

शारीरिक सिद्धान्त-

- लार्ड रदरफोर्ड, विलियम जेम्स, जैगविल, लैशले, मार्गन एवं बीच, क्रैशमर एवं शैलडन, हैब एवं स्टैलर इस सिद्धान्त के समर्थक हैं। लार्ड रदरफोर्ड के कथनानुसार 'सभी व्याखाएँ शारीरिक दृष्टि से होनी चाहिए। समूचा विज्ञान या तो भौतिक विज्ञान है या तथ्यों का एकत्रीकरण है।' विलियम जेम्स और जैगविल ने भी इन्हीं विचारों को प्रकट किया है। उनका विश्वास है कि मन से सभी रहस्य स्नायुविक-प्रणाली की कोशिकाओं में निहित हैं। लैशले, मार्गन और बीच ने शारीरिक-सिद्धान्त का समर्थन किया। क्रैशमर एवं शैलडन, जिन्होंने व्यक्तित्व एवं शरीर के परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन किया उन्होंने इस बात को निश्चित करने का प्रयास किया कि विभिन्न प्रकार की शरीर-रचना के अनुसार आवश्यकताएँ, इच्छाएँ, रूचियां तथा प्रवृत्तियां भी विभिन्न होती हैं। हैब एवं स्टैलर भी अभिप्रेरणा के शारीरिक सिद्धान्त के समर्थक हैं।

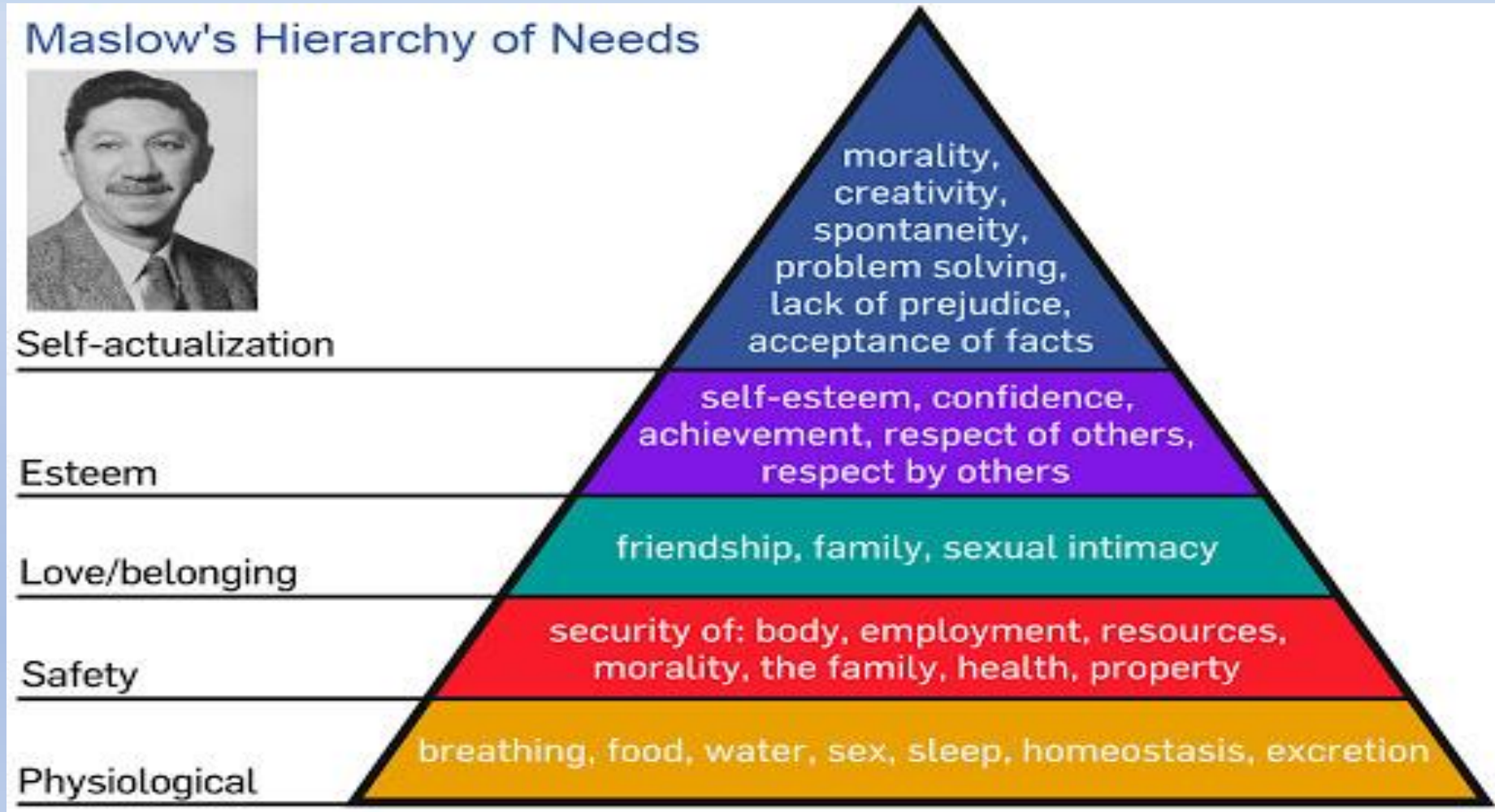
आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त-

- यह सिद्धान्त अब्राहम मैसलो द्वारा प्रतिपादित है। इसमें आवश्यकताओं पर अधिक बल दिया है। मैसलों ने आवश्यकताओं की तीव्रता को आधार बनाया। उनके अनुसार कुछ आवश्यकताएँ ऐसी होती हैं, जिन्हें तुरन्त पूरा करना आवश्यक होता है और कुछ आवश्यकतायें ऐसी होती हैं, जो की बाद में भी पूरी की जा सकती है। जैसे-एक भूखा व्यक्ति सबसे पहले अपनी भूख शान्त करेगा और शेष अन्य आवश्यकतायें बाद में पूरा करेगा। मैसलों ने आवश्यकताओं को उनकी तीव्रता के आधार पर पांच वर्गों में विभाजित कर उसका एक पदानुक्रम प्रस्तुत किया-

आवश्यकतायें

- शारीरिक प्रेरक या आवश्यकतायें
- सुरक्षा प्रेरक या आवश्यकतायें
- स्नेह व लगाव प्रेरक या आवश्यकतायें
- आत्म-सम्मान प्रेरक या आवश्यकतायें
- आत्म-सिद्धिकरण प्रेरक या आवश्यकतायें

आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त-



सारांश

प्रेरणा व्यक्ति की ऐसी आन्तरिक अवस्था है जिसके उत्पन्न होने पर वह बैचेनी का अनुभव करता है और इसे दूर करने के लिए एक विशेष प्रकार की क्रिया करता है। इस आन्तरिक अवस्था की उत्पत्ति किसी-न-किसी प्रकार की आवश्यकता की कमी या इच्छा से होती है।

- व्यक्ति जब किसी प्रकार की आवश्यकता से अग्रसर होकर किसी क्रिया को करता है, तब उसकी वह क्रिया आवश्यकता की पूर्ति होने अथवा उद्देश्य को प्राप्त करने की अवस्था तक चलती रहती है और आवश्यकता की पूर्ति होते ही वह क्रिया समाप्त हो जाती है। तथा व्यक्ति की बैचेनी दूर हो जाती है। इसे आवश्यकता प्रणोदन-प्रोत्साहन चक्र के रूप में भी जाना जाता है।
- अभिप्रेरक दो प्रकार के होते हैं-जन्मजात अथवा जैविक तथा अर्जित अथवा समाजजनित। जैविक प्रेरक के अन्तर्गत भूख, प्यास, सेक्स, मातृत्व भाव, मलोत्सर्जन, नींद आदि आते हैं। सामजजनित प्रेरक के अन्तर्गत सामुदायिकता, अर्जनात्मकता, जिज्ञासा, आत्मसम्मान तथा कलह सार्वजनिक अर्जित प्रेरक हैं जबकि उपलब्धि-प्रेरणा, आकांक्षा-स्तर आदत की विवशता, अभिरूचियां, मनोवृत्तियां आदि वैयक्तिक अर्जित प्रेरक हैं।
- अभिप्रेरणा के निम्नलिखित सिद्धान्त लोकप्रिय हैं- मनोविश्लेषणात्मक, ज्ञानवादी, व्यवहारवादी, शारीरिक तथा आवश्यकता पदानक्रमा।